“मुक्ति पर्व दिवस गीत”

मरने से पहले ही मर कर, हो गये हैं जो अमर
है नमन उनको,
यादो में है जो बसे , दिल में घर जो कर गये,
है नमन उनको ॥धृ॥

सुख से दुख से लाभ हानी से ऊपर उठकर रहे
जग में उँचा रूतबा पाकर भी सेवक बनकर रहे
भक्तजन वो महान थे, कितने वो गुणवान थे
है नमन उनको.....॥१॥

सतगुरू का हर वचन प्यारा था दिल और जान से
माना सत सत् करके जो कहा गुरू ने जुबान से
गुरूसिखी सिखला गये, जो गुरू को भा गये
है नमन उनको.....॥२॥

कर्म वो करते रहे बस फल की आशा की नहीं
सुख ही सुख बाँटा किसी के मन को पीडा दी नहीं
जीत कर इस जन्म को, हैं गये हँस हँस के जो
है नमन उनको.....॥३॥

बंदगी में ही ‘जगत’ गुजरी थी उनकी जिंदगी
बस इबादत के लिए की थी इबादत हर घडी
धन्य है वो संतजन, किया गुरू को समर्पण
है नमन उनको.....॥४॥

(तर्ज : ए मेरे प्यारे वतन.....)